स्वर्ण युग : भक्ति काल

MRS. PINKI DALAL
Prof. Hindi Vaish Arya Kanya Mahavidyalaya Bahadurgarh
Distt. Jhajjar (Haryana)

जार्ज गियर्सन ने अपने इतिहास ग्रन्थ में भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि बताते हुए इसे हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग कहा हैं।इसका कारण यह भी है कि यह अपने परवर्ती व पूर्ववर्ती साहित्य में श्रेश्ठ साहित्य हैं। जो इसके स्वर्ण युग होने पर मोहर लगाता है।

आचार्य राम चन्द्र षुक्ल के अनुसार भक्तिकाल का वर्गीकरण दो धाराओं में हुआ है। निर्गुण धारा व सगुण धारा। निर्गुण धारा को फिर से दो भागों में बांटा हैं– सन्त काव्य व सूफी काव्य जबकि सगुण धारा में राम काव्य व कृश्ण काव्य। इन चारों धाराओं का प्रतिनिधित्व करने वाले चार प्रमुख कवि –

1कबीरदास–सन्त काव्य धारा व ज्ञानाश्रयी षाखा

2जायसी– सूफी काव्य धारा व प्रेमाश्रयी षाखा

3 तुलसीदास–राम काव्य धारा

4 सुरदास– कृश्ण काव्य धारा

भक्तिकाल में सन्त काव्य धारा का अपना विषिश्ट योगदान रहा है। यह युग सामाजिक,राजनितिक,धार्मिक,व आर्थिक दृश्टि से बड़ा हि उथल– पुथल का युग था। और सन्त काव्य का मुल्यांकन करते हुए यह कहा जा सकता है कि यह अकृत्रिम,सहज एवं अनुभूतिजन्य है।

आचरण की षुद्धता पर बल देकर एवं बह्माडम्बरोंका खण्डन करके इन्होनें समाज को नई दिषा देने का महत्वपूर्ण काम किया है। देष में मुस्लिम साम्राज्य स्थापित हो जाने के कारण हिन्दु जनता निराष थी। सामाजिक क्षेत्र में ऊँच नीच की भावना बढ़ती जा रही थी। धर्म पर ब्राहम्ण वर्ग का प्रभुत्व था। इस्लाम धर्म में भी धार्मिक आडम्बरवाद प्रवेष कर चुका था। हिन्दु मुस्लमानों में परस्पर घृणा भाव बढ़ रहा था। संत कवियों ने बाह्माड़म्बरों का खण्डन किया, जाति पाति का विरोध किया।

अरे इन दोउन राह न पाई

हिन्दु अपनी करै बड़ाई, गागर छुबन न देई

वैष्या के पायन तर सौवे, यह देखो हिन्दुआई

मुसलमान के पीर औलिया मुर्गा मुर्गी खाई

खाला केरी बेटी ब्याहै घर ही में करै सगाई [1]

भक्ति काल के सन्त कवियों ने आत्म गौरव को महत्व देकर वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात किया है। भारतीय धर्म साधना में सन्तों का महत्वपूर्ण स्थान है। जीव,जगत,माया,और ब्रह्मा के सम्बन्ध में इनके विचार भारतीय परम्परा के अनुरूप थे।

हिन्दु तुरक जानै न दोई

सांई सब निका सोई हैरे, और न दूजा देखो कोई। [2]

संत साहित्य में ही नहीं, वरन् सकल भारतीय जीवन में गुरू को अत्यंत गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है, क्योंकि गुरू को ही अन्धकार, अज्ञान का निरोधक बताया गया है। भारतीय संस्कृति में गुरू की महत्ता निर्विवाद है। संत दादूदयाल की धारणा है कि गुरू ही मनुश्य से पषुता को परास्त कर देवत्व स्थापित करता है, ज्ञान देकर ब्रह्मा की अनुभूति कराता है।

सतगुरू की महिमा अनँत, अनँत किया उपहार।

लोचन अनँत उघाड़िया, अनँत दिखावणहार।। [3]

सन्त कबीर पढ़े– लिखे नहीं थे। उन्हानें जहाँ से जो अच्छा लगा वहाँ से सहर्श ग्रहण कर लिया।षायद यही कारण था कि उनके काव्य पर नाथपंथियों,अद्वैतवाद, वैश्णव धर्म,बोध धर्म,सिद्ध सम्प्रदाय के प्रभाव को देखा जा सकता है। सन्त कवियों ने किसी विषेश धर्म का पल्ला न पकड कर व्यवहारिक तत्व की समीक्षा की है। यहीं कारण है कि उनके काव्य में अनुभूति की सच्चाई व अभिव्यक्ति का खरापन है।कबीर मूलतः भक्त हैं, समाज सुधारक हैं, साधक हैं, मानवतावादी संत हैं, उसके बाद कवि हैं। कविता करना उनके जीवन का न तो प्रयोजन था और न ही ध्येय था। षब्दों और मात्राओं को गिनकर कविता करने वाले वो नहीं थे। कविता तो उनके सहज चित का प्रवाह थी।

जैसी मुख ते नीकसै तैसी चाले चाल

पार ब्रह्म नेडा रहै पल में करै निहाल

जैसी मुख ते नीकसै तैसी चाले नाहि

मानुश नहीं ते स्वान गति, बाधे जमपुर [4]

भक्त–संत कवि तुलसीदास ने धर्म को रागात्मक,व्यवहारिक,सामाजिक,रूपों के प्रतिपादन के साथ साथ उसके वैज्ञानिक स्वरूप को भी प्रस्तुत किया। उनकें अनुसार धर्म कोरा आदर्षवाद नहीं बल्कि वह मानव को भौतिक धरातल पर जीना सीखाता है। षारीरिक एवं मानसिक षुद्धि को आचरण की पवित्रता का स्त्रोत माना जाता है। तुलसी की विचार धारा भी तन मन की पवित्रता पर केन्द्रित है। राम भक्ति रूपी औशधि से मानसिक व षारीरिक रोगो से छुटकारा मिल जाता है।तुलसीदास के अनुसार मानव षरीर समस्त जीवधारियों में सर्वोत्तम माना जाता है।

नर तम सम नाहि कवनिउ देही।

जीव चराचर जाचत तेहि ।

नरक स्वर्ग,अपवर्ग निसेनी।

ग्यान,विराग भगति षुभ देनी।[5]

भक्ति काल में तुलसीदास द्वारा लिखा गया महाकाव्य रामचरितमानस अपने आप में एक अनुपम धरोहर है।जो आज भी हमारे पूजा धरों में निवास करता है। सभी प्रकार के दैहिक, दैविक, भौतिक ,तापो के नाष के लिए रामभक्ति की संजीवनी बूटी ही क्षेश्ठ है। काम ,क्रोध ,मद, लोभ, मोह आदि को मानसिक विकारों का कारण माना जाता है।

मानस रोग कछुभ मै गाए,

हहिं सबके लखि विरलेन्हजाए।[6]

भक्ति काल जिसको हम हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग कहते है वो आज के समाज में उतनी ही प्रांसगिकता रखता हैं।हम देख सकते है कि आज उपदेसक तो बहुत है जो हिन्दु मुस्लिम एकता के लिए चिल्लाते रहते है । अयोध्या की हिंसा उदाहरण स्वरूप ली जा सकती है।लेकिन समाधान किसी के पास दिखाईनहीं देता। लेकिन ध्यान से सन्तो को पढ़ा जाए या सुना जाए तो उनकी वाणीमें हम समाधान को ढुंढ सकतेहैं।

आपस कूँ मारे नहीं, पर कूँ मारण जाई

दादू आपा मारे बिना कैसे मिले खुदाई।

दादू भीतर बुदरी भरी हरे, तिनकूँ मारै नाहिं

साहिब की अखाह कूँ, ताकू मारण जाहिं।[7]

भक्ति काल के काव्य में हम आचरण की षुद्धता को देखतेहै।तुलसीदास के काव्य में वर्णित वैयक्तिक,पारिवारिक वसामाजिक आचरण के आदर्ष प्रत्येक युग के प्रत्येक मानव के लिए अनुकरणीय है। तुलसीदास जी कहते है कि षुद्ध आहार के साथ षुद्ध विहार अर्थात वातावरण की षुद्धि आवष्यक है।

वन बाग कूप तड़ाग सरिता ,सुभग सब सभ कौ कही।

मगंल बिपुल तोरन पताका, कतु गृह–गृह सोहहिं।[8]

कबीर जैसे महान सन्तो द्वारा दिया गया काव्य अपने जीवन में ढ़ाले व उन बुराइयों से छुटकारा पाये जो हमारे विकास मार्ग में अवरोधक है।यह कहना अतिष्योक्ति नहीं होगी कि आज के युग में भी संतो की वाणी हमें सही रास्ता दिखला सकती है व स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकती है।

अन्त में हम कह सकते है कि हिन्दी साहित्य के 1375–1700 के बीच में लिखा गया साहित्य कालजयी साहित्य है। इसको स्वर्ण युग कहना अतिष्योक्ति नहीं होगा।क्योंकि यह साहित्य ख्याति के लिए नहीं लिखा गया यह साहित्य युग की माँग के अनुरूप व आचरण की सभ्यता व सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना को ध्यान में रखकर लिखा गया। जिसकी आज भी हमारे समाज आवष्यकता है। आज वैज्ञानिकता का सहारा लेकर मानव अमरत्व की खोज करने में जुटा है वास्तव में इसकी बजाय धर्म एवं आचरण की षुद्धता के साथ मानव जीवन को पूर्ण बनाने की प्रबल आवष्यकता है।

प्रस्तुतकर्त्री –

श्रीमती पिंकी प्राध्यापिका हिन्दी विभाग

वैष्य आर्य कन्या महाविद्यालय ; बहादुरगढ़द्ध

सन्दर्भ–

1 रविन्द्र कुमार सिंह, संत काव्य की सामाजिक प्रासंगकिता पृश्ठ–91

2 परषुराम चतुर्वेदी दादू दयाल ग्रन्थावली पृश्ठ–27

3 मध्यकालीन काव्य कुंज, सम्पादक डॉ रामसजन पाण्डेय पृश्ठ–23

4 रविन्द्र कुमार सिंह, संत काव्य की सामाजिक प्रासंगकिता पृश्ठ–127

5रामचरितमानस,1 / 241 / 4 ।

6 रामचरितमानस,7 / 121ख / 1 ।

7परषुराम चतुर्वेदी दादू दयाल ग्रन्थावली पृश्ठ–49

8 अंश्टाग संग्रह –तीसरा अध्याय, पृश्ठ 2–4